समाजदर्शी शोध पत्रिका
SAMAJDARSHI SHODH PATRIKA

अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका (त्रैमासिक)

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL (QUARTERLY)

(PEER REVIEWED JOURNAL)

वर्ष-2, अंक-9 अप्रैल - जून 2017 ISSN : 2395 - 0374

www.samajdarshishodh.info

मुख्य सम्पादक :
डॉ.बबलू सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
जे.एस.एच. (पी.जी.) कॉलिज, अमरोहा।

Scanned by CamScanner

समाजदर्शी शोध पत्रिका

साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविकी एवं विज्ञान विषयों की समाजदर्शी
द्विभाषिक त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका (PEER REVIEWED JOURNAL)

वर्ष-2 अंक-9 (जनवरी 2017 से जून 2017) **ISSN No. 2395 - 0374**

GURU GHASIDAS SATNAM FOUNDATION PAMGARH 495554

सम्पादक मण्डल

मुख्य संरक्षक :

डॉ. तिलक सिंह, डी.लिट्

मुख्य सम्पादक :

डॉ. बबलू सिंह, डी.लिट् सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग-जे.एस.एच. (पी.जी.) अमरोहा(उ0प्र0)

सम्पादक :

डॉ. अजय कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर
हिन्दी विभाग - महामाया राजकीय महाविद्यालय
कौशाम्बी (उ0प्र0)

सह-सम्पादक :

डॉ. हेमन्तपाल घृतलहरे
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय सनावल, जिला-बलरामपुर
(छत्तीसगढ़)

उप-सम्पादक :

डॉ. श्रीमती आराधना कुमारी
महिला सेवा सदन डिग्री कालेज, इलाहाबाद।

डॉ. निखिल कुमार दास
जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।

डॉ. वीर वीरेन्द्र सिंह
जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।

डॉ. हरेन्द्र कुमार
जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।

डॉ. उमापति
बनारस विश्वविद्यालय, बनारस।

प्रबन्ध सम्पादक :

डॉ.प्रवीण कुमार
शम्भु दयाल कालेज, गाजियाबाद।

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
अग्रसेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊरानीपुर, झांसी।

डॉ. मनुप्रताप सिंह (डी.लिट्.)
बरेली कालिज, बरेली।

GURU GHASIDAS SATNAM FOUNDATION PAMGARH 495554

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

मीराबाई के काव्य की भक्ति और दार्शनिकता पर सम्पन्न शोध कार्यों का स्वरूप सम्भावनाएँ और राष्ट्रीय महत्त्व	डॉ. बबलू सिंह	7
भारतीय दर्शन और समाज-व्यवस्था	डॉ. धीरेन्द्र कुमार/ श्रीमती आदर्श कान्ता	11
इस्लाम का साहित्यिक स्वरूप : सूफी परम्परा एवं उर्दू कविता	डॉ. हेमलता सुमन	15
भारत की राजनीति में क्या क्षेत्रवाद उचित है?	नईम अहमद सिद्दीकी	22
कालेधन का सर्जिकल स्ट्राइक	डॉ. प्रभात कुमार	26
समकालीन हिन्दी उपन्यास और भूमण्डलीकरण	डॉ. मनु प्रताप, डी.लिट्	32
कबीर और गुरूघासीदास: आर्थिक चेतना और आर्थिक क्रांति	डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे	36
अश्वघोष कृत महाकाव्य में बौद्ध चिंतन धारा	उमापति	43
हिन्दी साहित्य और सिनेमा का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार	42
उत्तर छायावादी काव्यधारा : हालावाद में निहित जीवन दर्शन	डॉ. श्वेता रिछारिया	56
जनजातीय समाज और आधुनिक शिक्षा का प्ररिप्रेक्षय?	शालिनी वर्मा	61
शैवमत एवं शासक	डॉ. नरेश चन्द्र कापड़ी/डॉ. सरोज वर्मा	64
रीति स्वच्छन्द काव्यधारा के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन	अरूण कुमार चतुर्वेदी / डॉ. सतीश चन्द्र चतुर्वेदी	69
डा. अम्बेडकर का भारतीय सामाज में योगदान	सन्तकुमार मौर्य	76
अबला जीवन, हाय तुम्हारी यही कहानी.....	नेहा राय	82
हिन्दी आलोचना की दशा और दिशा	राम बिलास यादव	85
मध्यकालीन काव्य में वर्जना का स्वरूप एवं नैतिकता का सम्बन्ध	डॉ. गरिमा सिंह कुशवाह	89
जनपद अमरोहा में जल प्रवाह का आर्थिक महत्व एवं उपयोगिता (एक भौगोलिक विश्लेषण)	सुमन लता	93
पर्यावरण एंव भारतीय संविधान	अनिल कुमार	101
मध्य हिमालय की नन्दा-एक परिचय	डॉ. भारत सिंह	104
मानस में समाजवाद का उद्घोष और क्रान्तिचेतना में नैतिक मूल्यों की अवधारणा	पुनीता चतुर्वेदी-अरूण कुमार चतुर्वेदी डॉ. श्रीमती साधना जैन	108
प्रेमचंद की कहानियों में भाषिक संरचना	डॉ. अजय कुमार	112

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में सामाजिक यथार्थबोध	ममता देवी	115
अहिंसा का गांधीवादी दर्शन और युवा	डॉ. अरविंद कुमार	119
शिशु, शिक्षा और विकास : भारत सरकार की नीति	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह/मोनिका रानी	124
डॉ0 स्मेकल व उनका शोध कार्य	डा. ज्योति रानी	129
हिन्दी लोक कथाओं का विवेचनात्मक विश्लेषण	शीलू कुशवाहा	133
गोविन्द मित्र के कथा-साहित्य में दाम्पत्य जीवन	सुदेश कान्त	138
सैरन्ध्री नाटक के परिप्रेक्ष्य में वीररस अवमूल्यन	अजिता कनौजिया	143
प्रशान्तराघवम् नाटक में छन्द विमर्श	धर्मेन्द्र कुमार	147
जनपद रामपुर के माध्यमिक स्तर पर यू.पी. बोर्ड के विद्यालयों व सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन	मनु सिंह/डॉ. मंजू चौधरी	154
सीमाउपन्यासस्य नामकरणमौचित्यम्	सीता देवी	161
Some Analytical Aspects of Indian Agriculture in the Context of Libralisation	Dr. Anil Raipuria / Dr. Manish Tandon	165
Random Monitoring in Under Ground Water of the District Moradabad	Sweta Gupta / Dr. Dharmendra Singh	173
A Study of Riparian Fauna of Bagad River (A Tributary of Ganga)	Dr.Seema Sharma/ Dr.Pravesh Kumar/	180
Study of Riparian Flora of Bagad River (A Tributary of Ganga)	Dr.Seema Sharma/ Dr.Pravesh Kumar	185

Scanned by CamScanner

ISSN No. 2395 - 0374
जनवरी से जून 2017, अंक - 9

कबीर और गुरूघासीदासः आर्थिक चेतना और आर्थिक क्रांति

डॉ० हेमन्त पाल घृतलहरे
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास0 महाविद्यालय सनावल,जिला-बलरामपुर (छ.ग.)

मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को सफल सार्थक और परिपूर्ण बनाने के लिये मेरी दृष्टि में दो चीजें अत्यन्त महत्वपूर्ण है– धन और ध्यान। इस जगत की मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर जरूरत की तमाम वस्तुएँ धन के बगैर प्राप्त नहीं हो सकती। धन संसार में जीवन के सुव्यवस्थित संचालन के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण सहायक की भूमिका अदा करता है। इसी प्रकार मनुष्य के भीतरी जगत के क्षेत्र में ध्यान के बिना कोई गति नही हो सकती। ध्यान से ही दया, क्षमा, करूणा, विवेक शील, प्रज्ञा, बोध, आनन्द शान्ति, साक्षी और बुद्धत्व के फूल खिलते है। ध्यान से इस जीवन वृक्ष में बसंत–बहार आ सकती है, और धन से इसके लिये खाद–पानी, बागुड़ (सुरक्षा) की व्यवस्था हो सकती है। इसलिये जीवन में दोनो का महत्व है।

भारत में सदियों से दो संस्कृतियॉ विराजमान है– एक श्रमवादी संस्कृति और दूसरी भोगवादी संस्कृति। ''ब्रम्ह सत्य, जगत मिथ्या'' का सन्देश देने वाले ही सबसे ज्यादा धन, पद, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, काम, क्रोध (माया) में जकड़े नजर आते है। भोगवादी संस्कृति के लोग दूसरों के श्रम पर आश्रित होते है, ये कहीं पसीना नहीं बहाते बल्कि जुमलों की जुगलबंदी, डराने धमकाने और ठगने–लूटने का काम करते है। यही नहीं इन्होने श्रमवादी लोगों को सदा श्रमिक बनाये रखने की पूरी–पूरी कोशिश की है। भारत में वर्णव्यवस्था या जाति व्यवस्था इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जहॉ कार्य (श्रम) का भी विभाजन है, जन्माधारित। स्वंय ब्रम्हा ने अपने मुॅह, हाथ, जंघा और पॉवों से उत्पन्न वर्णो के अलग–अलग कर्म निर्दिष्ट किये–

सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थ स महादयुतिः।
मुखबाहुरूपज्जानां पृथकर्माव्यकल्पयत्।।(1)

–(मनुस्मृति 1–87)

इस वर्ण व्यवस्था के तहत पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना ये कर्म ब्राम्हणों के लिये तय किये गये–

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानाम कल्पयेत।।(2)

–(मनुस्मृति 1–88)

दूसरे क्रम में – प्रजा का संरक्षण, दान देना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, विषयों में आसक्त न होना आदि कर्म क्षत्रिय के लिये तय किये गये–

प्रजानां रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्व प्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।।(3)

–(मनुस्मृति 1–89)

तीसरे क्रम में वैश्य के लिये पशुपालन, दान, यज्ञ, विद्या अध्ययन, व्यवसाय महाजनी और कृषि कर्म नियत किये गये–

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।।(4)

–(मनुस्मृति 1–90)

Scanned by CamScanner

अंत में चौथे क्रम में बचे शूद्र के लिये केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा का एक ही कर्म करना तय किया गया–

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशात्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रुषामनसूयया।।(5)

–(मनुस्मृति 1–33)

इस वर्ण व्यवस्था को लागू करने और समर्थन में अनेक प्रमाणीकरण किये गये जिनमें श्रीकृष्ण के मुख से कहलवाया गया यह श्लोक बहुत प्रचलित है–

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्वयकर्तारमव्यम्।।(6)

–(भगवद्गीता4–13)

इस वर्ण व्यवस्थानुसार ब्राह्मण जन्म से ही सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ, सभी प्राणियों का ईश्वर (स्वामी) घोषित कर दिया गया–

ब्राह्मणों जायमानो हि पृथिव्यामधिजायते।
ईश्वरः सर्वभूतानां धर्म कोशस्य गुप्तये।।(7)

–(मनुस्मृति 1–99)

इसके अलावा क्योंकि ब्राह्मण की उत्पत्ति सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए संसार में जितना भी धन है, वह सब ब्राह्मण का है–ऐसा घोषित कर दिया गया–

सर्वस्वं ब्राह्मणस्येवं यत्किजिज्जगतीगतम्।
श्रेष्ठ येनाभिजनेनेदं सर्वे वै ब्राह्मणौडर्हति।।(8)

–(मनुस्मृति 1–100)

शूद्र केवल सेवा करेगा। उसे धन संचित करने का अधिकार नहीं था। उसके पास यदि कहीं से थोड़ा बहुत धन आ भी जाए तो ब्राह्मण उसे ले ले–

विस्त्रब्धं ब्राह्मणं शूद्रादद्रव्योपादानमाचरेत्।
नहि तस्यास्ति किञ्चित्स्वं भर्तृहार्यधनोहि सः।।(9)

–(मनुस्मृति 8–417)

शुद्र को खाने के लिये जूठन, पहनने को पुराने कपड़े, छोड़े हुए अन्न और फटे–पुराने बिछावन देने का प्रावधान किया गया–

उच्छिष्टमन्नं दानव्यं जीर्णानि वसनानि च।
पुलाकाश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदाः।।(10)

–(मनुस्मृति 10–125)

शुद्र को धन संचय न करने दिया जाये क्योंकि स्मृति अनुसार शुद्र धन होने पर ब्राह्मण को कष्ट पहुचाता है–

शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसंचयः।
शुद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानवबाधते।।(11)

–(मनुस्मृति 10–129)

इन तमाम वर्जनाओं ने एक बहुत बड़े (शूद्र) वर्ग को धन, बल, पद–प्रतिष्ठा, सम्मान से वंचित रखा और देश में धार्मिक, आर्थिक समाजिक और राजनैतिक रूप से वंचित एक कमजोर और लाचार, विपन्न वर्ग का जन्म हुआ। देश कमजोर हो गया, क्योंकि देश के बहुसंख्यक वर्ग को कोई प्रतिनिधित्व और अधिकार नहीं मिल पाया। विषमता की खाई बहुत गहरी हो गयी। धर्म और सत्ता के मेल से सारे षडयंत्र रचे गये और धन को माया, मिथ्या कहकर चालाक लोगों ने कमजोर वर्गो की जेब से निकालकर अपनी तिजोरी में बंद कर लिया। इस तरह धन, सम्मान, ज्ञान और शक्ति से वंचित होकर देश का बहुसंख्यक वर्ग हाशिये पर डाल दिया गया और भारतवर्ष इतना कमजोर हो गया कि सैकड़ों आक्रमणकारियों ने इस देश पर राज किया। मुटठीभर लोग शक्तिशाली हो गये और बहुसंख्यक वर्ग शक्तिहीन हो गया। समाज और देश के पतन का एक बड़ा कारण सिर्फ और सिर्फ सामाजिक आर्थिक वर्जनाएँ थी।

देश की ये तमाम परिस्थितियॉ इस देश के प्रज्ञावान संतो–महापुरूषों से भला कैसे छिप सकती थी, इन संतो–महापुरूषों में बुद्ध गोरख कबीरदास, नानक, गुरूघासीदास, चोखामेला ओशोफूले, अम्बेडकर और अन्य सभी मध्यकालीन संत शामिल है। इन सबका केवल एक ही सपना था– समतामूलक समाज की स्थापना। ये

Scanned by CamScanner

समतामूलक समाज–धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक एंव आर्थिक क्षेत्रों में समान भागीदारी एंव सशक्तिकरण से ही संभव हो सकता है।

विषमता की इस सच्चाई को कबीर ने भी देखा समझा। कबीर कहते है,

मैं कहता हौं। आँखन देखी
तू कहता कागद की लेखी
तेरा मेरा मनुवा कैसे एक होई रे।

यही आँखन देखी सच्चाई कबीर के भीतर सत्य की प्रचंड अग्नि को प्रज्वलित करती है, और विषमतावादी पाखण्डी व्यवस्था को जलाकर राख कर देने को आतुर प्रतीत होती है। जैसे कचरा जल जाए तो सोना कुन्दन हो जाता है, ऐसे ही वर्णव्यवस्था का कचरा जल जाये तो समतामूलक समाज का कुन्दन प्रकट हो जायेगा।

लेकिन निर्धनता किसी अभिशाप से कम नहीं। धनहीन व्यक्ति स्वतः ही बलहीन, मतिहीन हो जाता है। इसलिये आर्थिक सशक्तिकरण प्राथमिक आश्यकता है, अर्थ के अभाव में विकास का कोई स्वप्न भी देखा नही जा सकता।

संतो ने मंदिर की जगह गद्दी और सगुण की जगह निर्गुण ईश्वर की खोज कर ली, भक्ति की जगह अजपा को ले आये। कष्ट और आलोचना। सहकर भी ये अपने पथ से नही डिगे।

ओमप्रकाश बाल्मीकि लिखते है– *"चातुर्वर्ण्य –समाज–व्यवस्था के कारण इन सन्तो को भी समाज की अवहेलना सहन करनी पड़ी। ईश्वर भक्ति के लिए इन्हे मन्दिर के बाहर ही बैठना पड़ा। ईश्वर भी इनके लिए मन्दिर प्रवेश कराने में असमर्थ रहा। इनकी कोई मदद ईश्वर नहीं कर पाया।"(12)*

जब भक्ति के क्षेत्र में भाग्यवाद काम नहीं कर सकता तो आर्थिक सामाजिक क्षेत्र में कैसे कर पाता। फलतः गरीबी दूर नहीं हुई। यह गरीबी वर्णव्यवस्था की देन थी। कमजोर वर्गो की दरिद्रता का एक मार्मिक चित्र खींचती इस कविता का उल्लेख ओमप्रकाश बाल्मीकि ने अपने लेख में किया है–

"कच्चे घर में
जलते दीये की रोशनी पर
कब्जा करके बैठ गये तुम.....
मेरी पिंडलियों
और भुजाओं के मांस से बनी बाती
हड्डियों से निचोड़कर
निकाला गया तेल
किंतु इतना याद रखो
जिस रोज इन्कार कर दिया
दीया बनने से मेरे जिस्म ने
अंधेरे में खो जाओगे
हमेशा हमेशा के लिये।"(13)

इन पंक्तियों में दीनता के साथ–साथ आक्रोश भी है। यही आक्रोश आगे चलकर क्रान्ति का स्वर मुखरित कर पाया।

भक्ति आन्दोलन के माध्यम से सन्तो ने जागरूकता लाने की पुरजोर कोशिश की पर षडयंत्रकारियों ने इनके आन्दोलन को निष्प्रभावी करने के रास्ते खोज निकाले।

'मैनेजर पाण्डेय लिखते है – *"असल में निर्गुण, सूफी और सगुण अर्थात् पूरा भक्ति आन्दोलन जिस सामंती समाज के विरूद्ध खड़ा हुआ था, वह उससे अधिक शक्तिशाली साबित हुई। उसने भक्ति आन्दोलन की सभी धाराओं को धीरे–धीरे अपने अनुकूल बना लिया।"(14)*

तब कुछ क्रांतिकारी सन्तो ने अपने तेवर बदले जिनमें कबीर गुरूघासीदास आदि ने स्पष्ट रूप से मुखरित होने का बीड़ा उठाया और गुरू घासीदास ने तो यथार्थ के धरातल पर स्वंय नेतृत्व किया। इन सन्तो ने कमजोर एवं वंचित वर्गो को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिये कृषि और व्यवसाय की ओर उन्मुख किया।

कबीर अपने युग में बाजार की बात करते है। कबिरा खड़ा बाजार में इसी व्यावसायिक

Scanned by CamScanner

दखल की घोषणा है।

"कबीर बाजार में खड़े है। बाजार से ही कबीर को ताकत मिली। बाजार में उत्पाद बिकता है। कबीर कारीगर है और कारीगर अपने मेहनत से माल का उत्पादन करता है और मेहनत से तैयार किए गए उत्पाद को बाजार में बेचता है, पर खुद उत्पाद बनकर बिकता नहीं है। ..... यह श्रम जीवी वर्ग है, इसलिए परजीवी वर्ग के खिलाफ संघर्ष करता है। श्रम का बाजार से और बाजार का कबीर के कवि कर्म से गहरा ताल्लुक है।"(15)

कबीर केवल संत या कवि मात्र नहीं है, वे वंचितों के प्रतिनिधि भी है। उन्होने कपड़ा बुनने का व्यवसाय जीवन भर जारी रखा। रैदास ने जूता बनाने का व्यवसाय जीवन भर अनवरत जारी रखा। गुरू घासीदास ने कृषि उत्पादन कार्य को आजीवन जारी रखा। कबीर के शिष्य धर्मदास व्यवसायी थें। मध्यकाल के अनेक संत अपने–अपने व्यवसाय में लगे रहे। जिन वर्गो को जन्म से व्यवसाय निषिद्ध था उन्होने भी मनु के नियमों को तोड़कर जन्मना श्रेष्ठता को चुनौती दी और स्वतंत्र कार्य–व्यापार को अपनाकर आर्थिक आजादी का शंखनाद किया। धीरे–धीरे इनके अनुयायी भी अनुसरण करते गये।

कबीर कहते है–

'कबीरा खड़ा बजार में, मॉगे सबकी खैर।
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।।

अर्थात कबीर बाजार में खड़े होकर सबकी खैरियत (कुशलता) की कामना करते है। बाजार में खड़ा व्यवसायी (उत्पादक या वितरक) न किसी का दोस्त होता न किसी का दुश्मन, वह सबको समभाव (समान दृष्टि) से देखत है। बाजार में खड़ा व्यापारी जब अपने पेट की भूख को शान्त कर लेता है तब उसके दिल से सबके लिए दुआएँ निकलती है। व्यापार में बाजार में स्थापित (केन्द्र में) होकर अर्थात सफल होकर व्यक्ति दुआ करता है। जब अपने पास हो तो लगता है कि दूसरों के पास भी होना चाहिए। स्वंय तृप्त होने के बाद ही दूसरों की तृप्ति का ख्याल आता है। अपनी सम्पन्नता आने पर दूसरों को भी सुखी सम्पन्न बनाने का ख्याल आता है। बाजार या व्यापारी जाति धर्म के आधार पर अपना (दोस्त)–पराया (दुश्मन) नहीं देखता। आर्थिक रूप से सक्षम होने पर व्यक्ति किसी भी आन्दोलन को साकार कर सकता है, क्योंकि धन में शक्ति (बल) है। इसी बाजार ने कबीर को क्रान्ति करने की प्रेरणा और शक्ति दी जिसका प्रभाव आज तक है।

"अगर उस समय के बाजार ने कबीर को आर्थिक ताकत दी थी, जिसके बल पर उन्हौने सामंती–ब्राह्मणवादी समाज को चुनौती दी थी तो आज का दलित बाजारवाद के अंदर रहकर बाजारवाद की हिन्दुत्ववादी राजनीति को चुनौती दे रहा है। दलितों की इस राजनीतिक चुनौती का आधार सामाजिक–आर्थिक ही है, जो सांस्कृतिक स्तर पर आभिव्यक्ति पा रहा है।"(16) दलित व्यवसायी आज डिक्की (DICCI) बना चुके है।

कबीर कहते है–

कबीरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ।
जो घर बारै आपना वो चलै हमारे साथ।।

इसका तात्पर्य विरक्ति नहीं है। कबीर कह रहे है कि मैं बाजार में लुकाठी (मशाल) लेकर खड़ा हूँ। इस मशाल के प्रकाश में मुझे सबकुछ जैसा है वैसा साफ–साफ नजर आता है। बाजार में अच्छा–बुरा, नफा–नुकसान सब है, जिस पर निगरानी जरूरी है। मशाल जागरूकता का प्रतीक है। व्यवसाय जागरूकता से चलता है। बारना का अर्थ जलाना ही नहीं है। बल्कि प्रकाशित करना (आलोकित करना) भी है। कबीर कहते है कि जो अपने घर की दुःख दरिद्रता को जलाकर सुख–शान्ति से

Scanned by CamScanner

प्रकाशित (आलोकित) करना चाहते है, ऐसे कर्मठ, श्रमवादी लोग हमारे साथ चले, व्यवसाय करें।

इन संतो ने उत्पादन के नये तरीके ईजाद किये और आर्थिक सशक्तिकरण के मार्ग खोले। उनके वाणी उपदेश सबके लिये है, पर कमजोर वर्गो के सशक्तिकरण का सपना भी इनकी ऑखो में है, तभी समता का अर्थ फलित हो पाया है।

गुरू घासीदास ने अपने जीवन में सन् 1818 से 1850 तक सतनाम आन्दोलन चलाया जिसे विभिन्न विद्वानो ने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्रांति का नाम दिया।(17)

गुरू घासीदास के तत्कालीन समय में बेगारी प्रथा, लगान एंव आर्थिक शोषण चरम पर था, और इसके अधिकतम शिकार निम्न वर्ग के लोग होते थे। किसान भूमिहीन और भू–दास बन गये थे।

डॉ0 हीरालाल शुक्ल (गुरूघासीदास : संघर्ष, समन्वय और सिद्धान्त की भूमि में) लिखते है– "गुरू घासीदास दलितों की विपन्न स्थिति से बहुत दुःखी थें। उच्च आध्यात्मिक विरासत विद्यमान होने के बावजूद दलित शोषण के शिकार थे तथा उनका जीवन गुलामों से भी बदतर हो गया था।"

गुरू घासीदास के समय सामंत, जमींदार, मालगुजार, पिंडारी मराठा एंव अंग्रेजो का आतंक था। किसानों से उनकी जमीने छीनी जा रही थी, किसानो की फसले (अनाज) लूट जी जाती थी। जनता त्राहि–त्राहि कर रही थी। इस व्यवस्था को गुरूघासीदास और उनके अनुयायीयों ने ध्वस्त कर दिया।(18)

गुरू घासीदास का मध्यभारत पर जबर्दस्त प्रभाव था, और उनके अनुयायी पूरी तरह से कर्मठ और समर्पित थे। गुरू घासीदास ने जो उपदेश दिया वही आर्थिक क्रांति के आधार बनें–(19)

1. अपन बर बारा महीना के खरचा बटोर लेबे तब भक्ति भाव करबे नइतो झन कर (अर्थात अपने परिवार के लिये बारह महीने का खर्च धन–धान्य संचित कर लेना तब भक्ति भाव करना नहीं तो भक्ति मत करो, काम करो) उनके इस संदेश ने लोगो को श्रम के लिये प्रेरित किया। लोग कर्मवादी बने।
2. बेगारी झन करव (अर्थात बेगारी मत करों) उनके इस संदेश से लोगो ने बेगारी करना बन्द कर दिया और कृषक मजदूर संगठित होकर शोषण व अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने लगें।
3. लगान मत पटाव (अर्थात लगान जमा मत करो) सरकार और सामंतो द्वारा जो अनावश्यक अनेक कर किसानों पर लाद दिये गये थे, उनका विरोध इससे मुखरित हुआ और किसान संगठित हो गए।
4. अपरान्ह में खेतों में हल मत चलाव (अर्थात दोपहर के बाद खेतो में हम मत चलाओं) उस समय मालगुजारों द्वारा सुबह से शाम तक किसानों से हल चलवाया जाता था। गुरूघासीदास की यह वाणी किसानो को संगठित कर अन्याय व शोषण के विरूद्ध प्रतिरोध और प्रतिकार में खड़ी है। तब से लेकर आज तक मध्य भारत में किसान दोपहर के बाद खेतों में काम नही करते। श्रमिक 12 घण्टे के बजाय 08 घण्टे काम करते है।
5. मेहनत के रोटी सुख के अधार (अर्थात परिश्रम से कमाया हुआ रोटी ही सुख देता है)

इस वाणी से भिक्षावृत्ति, पलायन और भाग्यवादी प्रवृति पर लगाम लगा और श्रम की ओर रूझान उत्पन्न हुआ, श्रम का सम्मान बढ़ा।

6. खेती करव, खेती अपन सेती (अर्थात, कृषि

Scanned by CamScanner

करो, कृषि अपना व्यवसाय है)

गुरू घासीदास के प्रभाव में आकर हताश, निराश, लाचार किसानो और भूमि दासों ने अपनी–अपनी जमीन पर कब्जा कर खेती को व्यवसाय के रूप में करना शुरू कर दिया। इससे मध्यभारत में आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण का नया अध्याय प्रारंभ हुआ।

इसके अलावा उनका संदेश था जुआ, व्यभिचार, शराब एवं नशे से दूर रहने का। उनके उपदेशों से समाज में (सकारात्मक बदलाव आये।

गुरू घासीदास ने अपने संगठन में राजमहन्त, महन्त, भंडारी, सांटीदार की नियुक्ति (व्यवस्था) की तथा प्रत्येक गॉव पर नजर रखा, किसी गरीब को भूखे–प्यासे नहीं रहने दिया, उनकी व्यवस्था की। जो जमीनें छल या बल से जमींदारो ने छीन ली थी, उसे गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों ने वापस छुड़वाया और उन किसानें को दिलवाया जो उनके असली मालिक थे। चार्ल्स ग्राण्ट (1870) ने लिखा है– इसी प्रकार सतनामियों ने मराठा जमींदारों से 362 गॉव बलपूर्वक छुड़ा लिया और उन गॉवों के खुद मालगुजार बन गये जहॉ उन्हे दास की स्थिति में रखा जा रहा था।(20)

सामंत औपनिवेशिक प्रशासन ने निरक्षर जनता के लूट और शोषण के लिये लेखन को प्रमुख साधन बनाया था। किसानों की जमीन लिखवाकर बन्धक रखा था, इसलिये सतनाम के अनुयायियों ने जमींदारी, साहूकारी तथा सरकारी प्रभुत्व के संग्रहालय, गढ़ी, सरकारी कार्यालय तथा उनके लिखित सामग्री– बन्धक पत्र, दस्तावेज, पट्टा, रेहननामा, खाता, खतौनी तथा फाइलों को ही जला डाला (21) जो उनकी दुर्दशा के लिये जिम्मेदार थें। इस तरह गुरू घासीदास के नेतृत्व में किसानों ने अपनी आय के सोतों पर पुनः कब्जा किया और अपने सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग स्वंय प्रशस्त किया। तब तक रूसी क्रांति या मार्क्स की क्रांति का उदय भी नही हुआ था। गुरूघासीदास के नेतृत्व में मध्य भारत के मजदूरों किसानो, शोषितों ने कृषि एंव व्यवसाय को पुर्नस्थापित कर आर्थिक–सामाजिक रूप से अपने प्रभुत्व की स्थापना की।

मध्यकाल के संतो ने भी अपने युग में चरखे–करघें और रहट की सहायता से आर्थिक आन्दोलन चलाया। ''प्रसिद्ध मार्क्सवादी इतिहासकार इरफान हबीब ने किसी जगह पर लिखा है, कि मध्ययुग में चरखे–करघे और रहट ने एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई थी, जिसकी वजह से नई सामाजिक शक्तियों का उदय हुआ और पिछड़े और निम्न जातियों का आर्थिक–सामाजिक आधार मजबूत हुआ।''(22) वह कबीर का बाजार आज भी प्रेरणस्त्रोत है।

''कबीर उस बाजार में खड़े थे जो तर्को के केंद्रीकृत राज्य और विस्तार की वजह से बड़े बाजार के रूप में व्यापार का केन्द्र बन रहे थे और इस तरह बाजार और व्यापार एक दूसरे के नजदीक आ रहे थें।''(23)

वहीं गुरू घासीदास ने श्रमिकों, किसानों भूमिदासों को शोषण अन्याय के बन्धन से मुक्त कराया और आर्थिक (उत्पादन शक्ति) केन्द्रो पर कब्जा दिलाया। उनके वाणी और उपदेशों का आज भी इतना प्रभाव है, कि सतनामी किसी शोषण और अन्याय को कतई बर्दाश्त नहीं करते और अनेक जगहों पर मालगुजारों सी स्थिति में है।

आर्थिक सशक्तिकरण से ही जीवन में उन्नति के द्वारा खुलते हैं। कबीर की ''माया महाठगिनी हम जानी'' आर्थिक विकास के विरोध में नहीं है, बल्कि दिवास्वप्न के विरोध में है, दिवास्वप्न ही माया है।

छत्तीसगढ़ और मध्य भारत क्षेत्र में कबीर पंथ व सतनाम पंथ दोनो का प्रभाव है, दोनो की शिक्षाओं में बहुत सी समानताएँ है। महन्त,

Scanned by CamScanner

भंडारी आदि दोनो पंथ में है। दोनो पंथ में गुरू की ही पूजा है, गुरू सर्वोच्य है। दोनो वर्णव्यवस्था के विरोध में और समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में सहमत है। दोनो में गहरा सामंजस्य और समन्वय है।

संत कबीर और संत गुरू घासीदास को पारम्परिक गुरू या वर्ग विशेष के प्रतिनिधि के रूप में देखना उचित व न्यायपूर्ण नहीं होगा। वे महान क्रांतिकारी संत थे। उन्होने जीवन के समस्त क्षेत्रों में समूची मानव जाति का मार्गदर्शन किया है। उनके कार्य और उपदेश ने करोड़ो लोगों के जीवन में परिवर्तन लाया है। इसे समझने और अनुकरण करने की आवश्यकता है। कबीर कपड़ा बुनते थे और बुनकर के व्यवसाय से उन्होने सम्पन्नता अर्जित की। गुरू घासीदास के पास भंडारपुरी व अन्य गांवो में सैकड़ो एकड़ जमीन और मालगुजारों जैसी कृषि थी, उन्होने कृषि से सम्पन्नता अर्जित की। दोनो ने वर्ण व्यवस्था के मनुवादी विधान को तोड़कर धन संचय किया और अपने अनुयायियों को भी सम्पन्न बनाने की कोशिश की। क्योंकि सम्पन्नता से ही संसार और अध्यात्म के द्वारा खुलते है। ओशो ने 'जोरबा दि बुद्धा' की संकल्पना दी है और कहा है कि समृद्ध हुए बिना आस्तिक होना कठिन है। इस प्रकार आर्थिक उन्नति बहिर्जगत और अंतर्जगत दोनों के लिये समान रूप से महत्वपूर्ण है। आर्थिक सक्षमता सबका अधिकार है। अर्थशक्ति सारे विकास की जड़ है। कबीर और गुरू घासीदास की आर्थिक चेतना और आर्थिक क्रांति आज और भी प्रासंगिक व महत्वपूर्ण हो गयी है।

संदर्भ सूची

1. मनुस्मृति क्यों जलाई गई – डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन, प्रबुद्ध भारत पुस्तकालय और प्रकाशन व्यवसाय नागपुर, 2015, पृष्ठ–28
2. वही, पृष्ठ–29
3. वही, पृष्ठ–29
4. वही, पृष्ठ–30
5. वही, पृष्ठ–30
6. वही, पृष्ठ–34
7. वही, पृष्ठ–38
8. वही, पृष्ठ–38
9. वही, पृष्ठ–50
10. वही, पृष्ठ–50
11. वही, पृष्ठ–51
12. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष और यथार्थ–ओम प्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ–60
13. ˜ीवकीण्दमजध्शोध संचयन ै्छ 2249.9180ध्टवस. 1एल्मंत.1ए 15 रंद.2010 / मुख्यधारा के यथार्थ–ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृष्ठ–5
14. वही, दलित विमर्शः स्वानुभूति बनाम सहानुभूति का सवाल–डॉ. निरंजन कुमार, पृष्ठ–4
15. सबद बिबेकी कबीर संपा–डॉ. तेज सिंह, भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004, संकलित लेख–कबिरा खड़ा बाजार में (डॉ. तेज सिंह) पृष्ठ–192
16. वही, पृष्ठ–192
17. गुरू घासीदास संघर्ष, समन्वय और सिद्धान्त–डॉ. हीरालाल शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1995 एवं सतनामी और सतनाम आन्दोलन– डॉ. शंकर लाल टोडर, सत्यनाम सेवा संघ सेरीखेड़ी (मंदिर हसौद) रायपुर, 2000
18. वही
19. गुरू घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन (पीएच.डी. शोध प्रबंध)– हेमन्त पाल घृत लहरे, 2008
20. सतनाम एक वृहत समग्र जनक्रान्ति–भाऊराम घृतलहरे, गुरू घासीदास, साहित्य एंव संस्कृति अकादमी न्यू राजेन्द्रनगर, रायपुर, पृष्ठ–86
21. वही पृष्ठ–87
22. सबद बिबेकी कबीर–संपा. डॉ. तेज सिंह, भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004, संकलित लेख–कबिरा खड़ा बाजार में (डॉ. तेज सिंह) पृष्ठ–195
23. वही, पृष्ठ–197

●●●

Scanned by CamScanner